१. कबीर का जीवन-वृत्त

कबीर का जीवन-वृत्त अनेक दैवी कल्पनाओं, संभावनाओं एवम् लोक गल्पों पर आधारित है। जिन सूत्रों से कबीर के जीवन-वृत्त को गढ़ा गया है, वे अविश्वसनीय अधिक, विश्वसनीय कम हैं। जब कोई अतिशय प्रतिभाशाली अलौकिक व्यक्तित्व अवतरित होता है तो कार्य-कारण की सामान्य शृंखला टूटती-बिखरती नजर आती है। सामान्य मनुष्य को उस व्यक्ति के विषय में बहुत कुछ नये तरीके से सोचने-समझने के लिए विवश होना पड़ता है, यही विवशता तरह-तरह के अनुमानों एवम् अटकलों को जन्म देती है। वास्तविकता को आवृत्त करके अनुमान एवम् अटकलें ही प्रमुख प्रमाण बन जाती हैं। कबीरदास के जन्म-स्थान, माता-पिता, परिवार, जाति, संप्रदाय आदि के विषय में परस्पर विरोधी निष्कर्ष उपर्युक्त कारणों से ही निकाले गये। कुछ मान्यताएँ जो शताब्दियों के प्रचलन के कारण रूढ़ होकर सत्य प्रतीत होने लगती हैं। सामान्य जन आस्था उन्हें स्वीकार कर लेती है। विद्वत् समाज भी किसी पुष्ट एवम् विश्वसनीय विकल्प के अभाव में लोक आस्था से ही जुड़ जाता है। बीच-बीच में ऐसे भी स्वर उभरते हैं जो बड़ी बेरहमी से उस आस्था पर प्रहार करते हैं। भले ही वह आस्था टूटे या न टूटे, लेकिन प्रहार करने वाला अपनी कोशिश तक हर्षित अवश्य होता है।

कबीर के विषय में अपना मत प्रस्तुत करने वाले न तो गतानुगतकों की कमी है और न क्रांतिकारियों की। ऐसी परिस्थिति में यदि हम यही कहें कि 'कबीर जैसा है तैसा रहै, तू बानी के गुन गाय'—यह पंक्ति कबीर की उसी उक्ति की नकल पर रची गयी है, जिसमें कबीर ने कहा है कि 'हरि जैसा तैसा रहै, तू हरषि-हरषि गुन गाय।' कबीर का जन्म स्थान का श्रेय चाहे जिस गाँव, नगर, प्रदेश, देश को दिया जाय, उनकी जाति-पाँति का चाहे जो निर्धारण किया जाय लेकिन कबीर की सृजनशीलता के विविध पक्षों का जो रूप एवम् जो महत्व हमारे सामने है उसको न तो न्यून किया जा सकता है, और न ही उसे नकारा जा सकता है। जो साधक जीवन-पर्यन्त जाति-पाँति, देश-काल की सीमाओं के विरुद्ध संघर्षरत रहा है, उसकी उन्हीं सीमाओं की तलाश, अपने आप में कितनी सार्थक होगी। फिर भी एक महान रचनाकार के जीवन-सूत्रों और उसके सृजनात्मक परिवेश के अन्वेषण को नितान्त महत्वहीन भी नहीं कहा जा सकता।

कबीरदास के जन्म और उद्‌बोधन दोनों प्रसंगों से रामानन्द का नाम जुड़ा हुआ है। इसे संयोग या दुर्योग ही कहा जायेगा कि रामानन्द जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी दक्षिण भारत से उमड़ने वाले भक्ति आन्दोलन के हिन्दी-प्रदेश में प्रथम ग्राहक थे जिसमें शूद्रों एवम् स्त्रियों के मुक्त होने का उपाय निहित था, जिन्हें तथाकथित ब्राह्मणों ने (जैसा कि सभी का आरोप है) वेद मार्ग से वंचित कर रखा था। रामानन्द के जिन बारह शिष्यों का उल्लेख भक्तमाल में मिलता है, उनमें अनेक जाति-धर्म के लोग थे, ऐसी स्थिति में रामानन्द का शिष्य बनने के लिए कबीर को विशेष युक्ति का सहारा लेना पड़ा हो, यह विश्वसनीय नहीं लगता। कबीर ने यद्यपि एक जगह कहा है—'काशी में हम प्रकट भये हैं रामानन्द चेताए' लेकिन इस उक्ति

Scanned with CamScanner

को विद्वान् को आलोचकों ने प्रामाणिक नहीं माना है कि कबीर के गुरु रामानन्द थे।

कबीर के जन्म के सम्बन्ध में ऐसी लोक मान्यता है कि कबीर का जन्म रामानन्द के आशीर्वाद से एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था, किन्तु उक्त ब्राह्मणी ने लोक-लज्जा वश काशी के पास लहरतारा नामक स्थान पर नवजात शिशु को फेंक दिया और संयोगवश उसी मार्ग से अली या नीरू-नीमा नाम के जुलाहे गुजर रहे थे कि नवजात शिशु पर दृष्टि पड़ गयी और उसे घर ले आये, उसका पालन-पोषण किया और शिशु का नाम कबीर रखा। असाधारण परिस्थितियों में जन्मे कबीर के जन्म के विषय में जो लोक कथा प्रचलित है यह कबीर का संबंध किसी न किसी रूप में ब्राह्मण-वंश से जोड़ती है। आशीर्वाद की बात तो बहुत वैज्ञानिक नहीं प्रतीत होती किन्तु विधवा ब्राह्मणी के रूप-सौन्दर्य पर कोई महात्मा रीझ गया होगा और उसी के दैहिक संपर्क के फलस्वरूप बालक का जन्म हुआ होगा। यह महात्मा रामानंद से कोई भिन्न व्यक्ति रहा होगा। रामानन्द के आशीर्वाद की बात बाद में कल्पित कर ली गई।

कबीर ने अपने माता-पिता के नाम का उल्लेख नहीं किया है, किन्तु ऐसा माना जाता है कि कबीर के पिता एक बड़े गोसाईं थे–'पिता हमारो बड़ गोसाईं। तिसु पिता पहिहउं किंउ करि जाई'। लेकिन उक्त पद का अर्थ है कि मेरा पिता सबसे बड़ा स्वामी (बड़ा गोसाईं) अर्थात् जगत्पिता है। ऐसे पिता के नजदीक मैं कैसे जाने की हिम्मत कर सकता हूँ। स्पष्ट है कि उक्त बात कबीर ने अपने निर्गुण ब्रह्म के लिए ही कहा है। अतः कबीर के पिता गोसाईं नहीं हो सकते। 'रामानंद दिग्विजय' ग्रंथ में लिखा है कि कोई आकाशगामी देवता अपनी प्रियतमा की पीड़ा से व्यथित था। उसका वीर्य स्खलन काशी के लहरतारा तालाब के एक कमल के पत्ते पर हुआ जिससे एक बालक हो गया। एक अन्य विचार के अनुसार कबीर के वास्तविक पिता का नाम स्वामी अष्टानन्द था, जिन्होंने कबीर की ज्योति का दर्शन सर्वप्रथम किया था और इन्होंने इसकी सूचना रामानन्द को दी थी परन्तु हिन्दू प्रथाओं के भय से कबीर की माता को उन्होंने पत्नी रूप में स्वीकार नहीं किया।

नाभादास ने अपने भक्तमाल में दो छप्पयों में कबीर के विषय में कुछ सूचनाएँ दी हैं। प्रथम छप्पय में कबीरदास की वाणी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। जैसे उनके द्वारा स्थापित भक्ति की विशिष्टता, योग, यज्ञ, व्रत और दान की तुच्छता। हिन्दू और तुर्क दोनों के प्रमाण हेतु रमैनी, सबदी और साखी की रचना, वर्णाश्रम धर्म की उपेक्षा आदि। साथ ही रामानन्द के शिष्यों में कबीर की भी परिगणना की गई है। दूसरे छप्पय की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतरन कियो।।
अनन्तानन्द कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावति नरहरि।
पीपा वामानन्द रैदास धना सेन सुरसरि की धरहरि।।
औरो शिष्य प्रशिष्य एकते एक उजागर।
विश्व मंगल आधार सर्वानन्द दशधा के आगर।।
बहुत काल बपु धारि कै प्रनत जनत को पार दियौ।
श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतरन कियौ।

(भक्त माल छप्पय ३१, पृ. २८८)

Scanned with CamScanner

पूर्वोक्त बाह्य साक्ष्यों को यदि प्रामाणिक न माना जाय तो भी इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कबीरदास रामानन्द के ब्राह्मण धर्म के नहीं बल्कि उनके द्वारा प्रवर्तित भक्ति-साधना के सशक्त उत्तराधिकारी थे। कहा जाता है कि–'भक्ति द्राविड़ी ऊपजी लाये रामानन्द, प्रकट किया कबीर ने सप्तद्वीप नवखंड।' रामानन्द और कबीर का यही सामीप्य अनेक किंवदंतियों का स्रोत है। निष्कर्ष रूप में कबीर रामानन्द से तीन अर्थ में जुड़ते हैं प्रथम जन्म के सम्बन्ध में, द्वितीय गुरु के रूप में और तृतीय भक्ति के उत्तराधिकारी के रूप में। इनमें तृतीय सम्बन्ध ही निर्विवाद रूप से मान्य हो सकता है शेष संदिग्ध हैं।

इन कथाओं से इतना स्पष्ट है कि कबीर को जन्म लेते ही उन्हीं बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए छोड़ दिया गया जिन बुराइयों के परिणामस्वरूप कबीर ने देह धारण की।

कबीरदास के जन्म स्थान के विषय में भी मतभेद है। कबीर के जन्म-स्थान से जुड़ने वाले चार गाँव या नगर हैं–मगहर, बेलहरा, मिथिला और काशी। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में एक पंक्ति है–

'पहिले दरसनु मगहर पाइओ पुनि कासी बसे आई।' इससे स्पष्ट है कि कबीर ने पहले पहल मगहर में संसार या ईश्वर का दर्शन किया, बाद में काशी में बस गए। डॉ० बड़थ्वाल इसी आधार पर कबीर का जन्म मगहर मानते हैं। मगहर प्रधानतया जुलाहों की बस्ती है (हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृ० ५)। मगहर के प्रति कबीर का विशेष अनुराग भी इस तथ्य को प्रमाणित करता है। डॉ० रामकुमार वर्मा का विचार है कि 'मृत्यु के समय उनका मगहर लौट जाना, मनुष्य की उस स्वाभाविक प्रेरणा का प्रतीक हो सकता है, जिससे वह अपनी जन्म-भूमि या उसके समीप ही आकर मरना चाहता है। अतः मेरे दृष्टिकोण से कबीर का मगहर में जन्म मानना अधिक युक्ति संगत है। (संत कबीर, पृ० ७६) डॉ० चन्द्रबली पांडेय बनारस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के आधार पर कबीर का जन्म आजमगढ़ जनपदान्तर्गत बेलहरा नामक गाँव को मानते हैं। यह बेलहर पोखर जनता द्वारा लहरतारा नाम से प्रचलित किया गया।

सुभद्र झा ने कबीर का जन्म मिथिला माना है। उनकी मान्यता दूरारूढ़ कल्पना पर आधारित है। कबीर का जन्म काशी में हुआ था इस पक्ष में निम्नलिखित पंक्तियां उद्धृत की जाती हैं– तू ब्राह्मन मैं कासी का जोलहा, चीन्हि न मोर गियाना।' (कबीर ग्रंथावली-पारसनाथ तिवारी, पृ० १०६) अनंतदास ने कबीर परचयी में कबीर को काशी का जुलाहा कहा है। जनश्रुति के अनुसार कबीर काशी के लहरतारा नामक तालाब के किनारे पाए गए थे। काशी के साथ कबीर का गहरा लगाव था। 'आदि ग्रंथ साहब' में लिखित अधोलिखित पद के आधार पर यही सिद्ध होता है–

ज्यों जल छाँड़ि बाहर भयो मीना।
पूरब जन्म हौं तप का हीना।।
अब कुहराम कवन मति मोरी।
तजिले बनारस मति भई थोरी।।
बहुत बरस तप कीया कासी।
मरनु भया मगहर की वासी।।
कासी मगहर सम विचारी।
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी।।

Scanned with CamScanner

कहु गुरु गजि सिव सम्भु को जानै।
मुआ कबीर रमता श्री रामै।।

गुरु की महिमा का विविध रूपों में गान करने वाले कबीर के गुरु का भी निश्चित रूप से पता नहीं है। वह कौन-सा महात्मा था जिसके समक्ष अक्खड़ मिजाज का यह सन्त श्रद्धावनत हुआ। भक्ति-भाव के अग्रदूत रामानन्द को परम्परया इस गौरव से विभूषित किया जाता है। भक्ति के क्षेत्र में जाँति-पाँति के कठोर बन्धन की शिथिलता तथा जातीय समानता को उद्घोषित करने वाले रामानन्द, कबीर जैसे शिष्य को क्या सहज रूप से स्वीकार कर सके थे? कबीर को, जो जाति का जुलाहा और धार्मिक सम्प्रदाय की दृष्टि से मुसलमान था और जो अपनी इन सीमाओं को लाँघ कर हिन्दू गुरु की शरण में आना चाहता था, रामानन्द की दीक्षा मिल सकती थी? भारतीय समाज में यह पहली समस्या नहीं थी। एकलव्य के सामने भी इसी तरह की कठिनाई उत्पन्न हुई थी। कबीर की समस्या और भी गम्भीर थी क्योंकि धनुर्विद्या की अपेक्षा ब्रह्मविद्या अधिक पवित्र एवं गोपनीय है। कबीर अजीब द्वन्द्वात्मक स्थिति में थे। बिना गुरु के लोग उनकी बातों को सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे और कोई महात्मा उनको शिष्य बनाने को तैयार नहीं था। रामानन्द से भी समाज और धर्म की मर्यादा तोड़ी नहीं जा सकी। कबीर ने बड़ी चतुराई से उपाय ढूँढ़ निकाला। रामानन्द नित्य पंचगंगा घाट पर ब्राह्म मुहूर्त्त में ही स्नान करने जाते थे। घाट की सीढ़ियों पर कबीर पहले से ही जाकर लेट गये। स्नान करके लौटते हुए रामानन्द जी का पाँव अँधेरे में कबीर के ऊपर पड़ गया और उनके मुँह से 'राम-राम' निकल पड़ा। कबीर ने इसी को गुरुमंत्र मान कर अपने को रामानन्द का शिष्य समझ लिया। रामानन्द और कबीर के इस रिश्ते का प्रमाण मात्र लोक प्रसिद्धि है। इसके सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक प्रबल प्रमाण नहीं मिलता। कुछ विद्वानों के अनुसार 'मीर तकी' नामक एक पीर कबीर के गुरु थे। कबीर ने झूँसीवासी मीर तकी से सत्संगति भले ही की हो किन्तु उन्हें गुरु रूप नहीं माना। कुछ मुसलमान कबीर पंथियों का विचार है कि सूफी फकीर शेख तकी कबीर के गुरु थे। कबीर ने शेख के प्रति जो सम्बोधन किया है उसमें वह आदर भाव नहीं है जो गुरु के प्रति अपेक्षित होता है। इस मत को प्रस्तुत करने का आधार कबीर की अधोलिखित पंक्तियाँ हैं जिन्हें कुछ विद्वान् असंदिग्ध रूप से प्रामाणिक भी नहीं मानते–

मानिकपुरहि कबीर बसेरी, मदहति सुनि शेख तकि केरी।
ऊजी सुनी जौनपुर थाना, झूँसी सुनि पीरन के नामा।।

कबीर का यह दोहा यदि प्रामाणिक है तो रामानन्द ही उनके गुरु ठहरते हैं–

सद्गुरु के परताप ते, मिटि गयो सब दुख दंद।
कह कबीर दुविधा मिटी, गुरु मिलिया रामानन्द।।

कबीर की आयु ७० वर्ष से लेकर १२० वर्ष तक मानी जाती है। कबीर की मृत्यु-तिथि को प्रकट करने वाले अधोलिखित दोहे प्रसिद्ध हैं–

संवत पन्द्रह सौ पछत्तरा, किया मगहर को गवन।
माघ सुदी एकादशी रल्यो पवन में पवन।।
पन्द्रह सौ औ पाँच में, मगहर कीन्हों गौन।
अगहन सुदी एकादशी, मिल्यौ पौन में पौन।।

Scanned with CamScanner

सिकन्दर लोदी की समकालीनता, गुरुनानक से कबीर की मुलाकात, कबीर के प्रधान उत्तराधिकारी धर्मदास के द्वारा किये गये वाणी संग्रह आदि तथ्यों से जुड़ी हुई तिथियों के आलोक में श्यामसुन्दर दास ने कबीर की मृत्यु तिथि को संवत् १५७५ को संगत तिथि के रूप में निर्धारित किया है।

कबीर ने अपने इस लम्बे जीवनकाल में बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ जाना, बहुत कुछ सुना और बहुत कुछ गुना। जाँचते-परखते, ग्रहण करते और छोड़ते उनका सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हुआ। एक ही तत्त्व उनके पास ऐसा था जिसको वे जीवन पर्यन्त अपने हृदय में सम्हाले रहे वह तत्त्व था राम। कहा जाता है कि कबीर ने विवाह भी किया था किन्तु जब विचार किया तो उसे छोड़ दिया। कुछ विद्वानों का दावा है कि कबीर की दो पत्नियाँ थीं–लोई और रामजनिया या धनिया। जिन छन्दों के आधार पर इन स्त्रियों की बात कही जाती है उनका सामान्य अर्थ से अलग आध्यात्मिक अर्थ भी है। ऐसी परिस्थिति में निश्चित ढंग से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। नारी की बराबर निन्दा करने वाले कबीर ने दो-दो विवाह किया होगा, कुछ असंभव सा दीखता है। आँखिन की देखी में विश्वास जमाने वाला संत कबीर एक विवाह के अनुभव से गुजरकर पारिवारिक समस्याओं से परिचित हुआ होगा। जिस तरह पत्नियों के विषय में विद्वानों ने दूर की कौड़ी खोज ली है उसी तरह पुत्र कमाल और पुत्री कमाली के विषय में कुछ ब्यौरे इकट्ठे कर लिये हैं।

कबीर का जीवन भिक्षा-वृत्ति पर निर्भर नहीं था। वयन कर्म द्वारा उन्होंने अपनी जीविका चलाने का प्रयत्न किया। इतना अवश्य है कि बीच-बीच में राम की भक्ति में लीन हो जाने के कारण तनना-बुनना अवरुद्ध हो जाता था। कबीर की इस मस्ती से उनकी माँ बहुत दुखी रहती थीं–

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई।
ये बारिक कैसे जीवहिं रघुराई।।

कबीर अपनी भक्ति-भावना में 'ज्ञान' की महिमा को प्रतिपादित तो करते हैं किन्तु उनका यह ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान से अलग अनुभूतिजन्य ज्ञान है। वस्तुतः वे प्रेम और भक्ति रहित ज्ञान के विरोधी थे। प्रारम्भ में शास्त्रीय ज्ञान की महत्ता उन्हें भी मान्य थी लेकिन बाद में उनका ध्यान भक्ति-योग की ओर गया–

मैं जाण्यूँ पढ़िबौ भलौ, पढ़िबा थैं भलौं जोग।
राम नाम सूं प्रीति कर, भल भल नीदौं लोग।।

अन्त में तो वे सलाह देते हैं–

कबीर पढ़िबो दूर करि, पुस्तक देइ बहाइ।
बाँवन अषिर सोधि करि, ररै ममै चितलाइ।।

कबीर की ये उक्तियाँ भक्ति साधना के संदर्भ में शास्त्रीय ज्ञान की सीमाओं की ओर संकेत करती हैं। इनका सीधा-सादा तात्पर्य यह नहीं है कि कबीर अनपढ़ और अशिक्षित थे। कबीर का सम्बन्ध जिस वेद-विरोधी वर्ग से माना जाता है उसमें शास्त्र न तो सर्वसुलभ माना जाता था और न सभी जातियों को वेद-अध्ययन की सुविधा थी। कबीर ने वेदों को स्वयं नहीं पढ़ा था इसीलिए वे अनपढ़ थे। वे पुराण की कहानियाँ सुनाकर जीविका का साधन नहीं जुटाते थे, उन्हें ऐसा करने की छूट भी नहीं थी। अहंकार उत्पन्न करने वाले पुस्तकीय ज्ञान से

Scanned with CamScanner

वे कोसों दूर रहना चाहते थे। किसी वर्ग विशेष के लिए सुरक्षित ज्ञान उन्हें अभीष्ट नहीं था। काशी के दिग्गज पंडितों को उन्होंने खूब ध्यान से सुना था, साधु-सन्तों से विचार-विमर्श करके ज्ञान के मर्म को समझा था। सम्पूर्ण ज्ञान को मथकर उन्होंने 'राम' नाम को निकाला था। कबीर सरहपा की उसी इच्छा को या उसी चुनौती को सार्थक बनाते हैं जिसमें उन्होंने कहा था–

अक्खर वाड़ा सअल जगु, नाहिं णिरक्खर कोइ।
ताव से अक्खर घोलिअइ, जाव णिरक्खर होइ।।

कबीर इसी तरह के 'निरक्षर' थे। इनके मूलभाव को न समझने वाले आलोचकों ने बड़े ही सहज ढंग से कुप्रचार कर दिया कि कबीर 'अनपढ़' थे। कबीर ने ज्ञान के गहन विस्तार में से एक सूत्र निकाल लिया था वह सूत्र था 'राम'। इसी के आधार पर सम्पूर्ण भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा का साक्षात्कार किया जा सकता था। इस सूत्र की व्याप्ति को भलीभाँति समझने वाला व्यक्ति कबीर की निगाह में 'पंडित' था। कबीर इसी अर्थ में पंडित थे जिसको हम सरहपा की सन्धा भाषा में निरक्षर पंडित कह सकते हैं। कबीर स्वयं कहते हैं–

पोथी पढ़ि पढ़ि जुग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एकै आषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

इस नये ढंग के पंडित की मुठभेड़ प्रायः काशी के पंडितों से हुआ करती थी। वह उन्हें ऐसे ज्ञान से परिचित कराना चाहता था जो शुद्ध हृदय से उद्‌भूत था और जिसमें वेद का लोकपक्ष अधिक मुखर था। कबीर पंडितों को अपने ज्ञान को बूझने और 'चीन्हने' के लिए आमंत्रित करते रहे। वर्णाश्रम पर आधारित समाज और भेद-भाव पर आधारित ज्ञान उनके लिए चुनौती था। कबीर अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए सहज-संवेद्य ज्ञान की उस पराकाष्ठा पर पहुँच गये जहाँ वे स्वयं ज्ञानियों और पंडितों के लिए चुनौती बन गये।

२. कबीर साहित्य की प्रामाणिकता

मध्यकालीन धर्म साधना और काव्य साधना के क्षेत्र में अत्यन्त तेजस्वी एवं प्रतिभावान कबीरदास अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सन्दर्भ में अनेक प्रकार की आशंकाओं, सन्देहों तथा विवादों के घेरे में रहे हैं। कबीर के जन्म, जाति, सम्प्रदाय, वैचारिक प्रभाव, महाप्रस्थान की तिथि तथा स्थान, काव्य भाषा आदि अनेक पक्ष हैं जिन पर अन्तिम रूप से कोई भी निर्भ्रान्त निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' की तरह कबीर से सम्बन्धित अनेक कथाएँ हैं जो उनके अनेक रूपों को सामने लाती हैं। प्रस्तुत लेख में अन्य विवादों को छोड़कर केवल कबीर के उपलब्ध साहित्य की प्रामाणिकता पर ही विचार करने का प्रयत्न किया जा रहा है। कबीरपंथी लोगों का विश्वास है कि सद्‌गुरु की वाणी अनन्त है। चूँकि कबीरदास ने मसि कागद छुआ नहीं था, इसलिए इतना निश्चित है कि कबीर की वाणी को उनके शिष्यों ने अंकित किया और उसके प्रस्तुतीकरण में अपनी क्षेत्रीय भाषा के प्रभावों से अछूते नहीं रहे। कबीर के साथ लोक समाज का ऐसा गहरा लगाव हुआ कि वे भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा की व्यावहारिक परिणति कबीर के नाम की छाप देकर ही करते रहे। कबीरपंथी रचनाकारों ने इस कार्य में विशेष योगदान किया है। उन्होंने अपने पंथ की मान्यताओं को पुष्ट करने के लिए कबीर के नाम पर अनेक रचनाओं को प्रस्तुत करके कबीर वाणी की प्रामाणिकता को सन्दिग्ध बना दिया। पंथ के अनेक ग्रन्थों में

Scanned with CamScanner